Sampreshan
UGC CARE GROUP 1
https://sampreshan.info/
Vol. 17, Issue No. 2, June 2024
ISSN: 2347-2979

# "भारत के संदर्भ में समाजशास्त्र का महत्व"

**श्रीमती साजिदा जमाल (M.A. SOCIOLOGY)**

**शोध सारांश :–** भारत जैसे विकासशील देश में समाजशास्त्र के अध्ययन का विशेष महत्व है, जहां एक तरफ कई सामाजिक समस्याएं है तो दूसरी तरफ विभिन्न विकास योजनाओं के माध्यम से देश उन्नति की ओर अग्रेषित करना होता है। समाजशास्त्र एक सामान्य सामाजिक विज्ञान है जो अपने को एक विशिष्ट समाज के अध्ययन तक ही सीमित नही रखता बल्कि विभिन्न समाजों के अध्ययनों के आधार पर व्यवस्थित ज्ञान संकलित करता है, यह ज्ञान संपूर्ण मानव समाज को समझने में सहयोग देता है, साथ ही तेजी से बदलते जटिल सामाजिक गतिविधियां एवं सामाजिक संरचनाओ के संबंध में भी वैज्ञानिक ज्ञान प्रदान करता है, समाज शास्त्र के अध्ययन से रीतिरिवाज, परंपराओं, संस्थाओ एवं व्यवहार के तरीको को ही सर्वश्रेष्ठ न मानकर अन्य समाजों के तौर तरीकों को भी समान रूप से महत्व देता है। समाजशास्त्र के अध्ययन से व्यक्ति को समाज के उददेश्यों व आदर्शो को समझने में मदद मिलती है और उनकी प्राप्ति में भी सहयोग दे पाता है। समाज जितना बड़ा होगा और उसमें उतने अधिक विभेद होंगे जाति, प्रजाति, धर्म, भाषा, प्रांतीयता आदि के आधार पर जितने ज्यादा अंतर होंगे उतनी ही समाज के संबंध में वैज्ञानिक जानकारी की अधिक आवश्यकता रहेगी। इस प्रकार समाजशास्त्र के अध्ययन इस दृष्टि से विशेष महत्व है कि यह संपूर्ण मानव समाज को समझने में सहयोग देता है।

**शब्द कुंजी–** समाजशास्त्र का महत्व, समाजशास्त्र की प्रासंगिकता

भारत की सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों के संदर्भ में समाजशास्त्र के अध्ययन का निम्न कारणों से विशेष महत्व है ।

1. **राष्ट्रीय एकता में सहायक –** आज भारत के सम्मुख राष्ट्रीय एकता की समस्या एक प्रमुख समस्या है, आज राष्ट्र जाति, प्रजाति, भाषा, धर्म, प्रांत आदि के आधार पर विभिन्न छोटे–छोटे स्वार्थ समुहों में बंटा हुआ है। व्यक्ति संपूर्ण राष्ट्र या समाज के दृष्टिकोण से न सोचकर अपनी जाति, भाषा या प्रांत के दृष्टिकोण से सोचता है परिणामस्वरूप देशवासियों में संकीर्ण दृष्टिकोण पाया जाता हैं। परिणामस्वरूप संकीर्ण दृष्टिकोण का विकास होता है जिसमें जातिवाद, भाषावाद, संप्रदायवाद, क्षेत्रवाद, आदि के संबंध में भी यर्थाथ जानकारी प्रदान कर व्यक्ति को उदारवादी दृष्टिकोण अपनाने में सहयोग देता है। साथ ही समाजशास्त्र की भिन्न–भिन्न समाजों की परंपरा और

जनरीतियों को समझने में सहायता करता है, समाजशास्त्र का ज्ञान पक्षपातपूर्ण दृष्टिकोण को अंत करने व्यक्ति की संकीर्णता से छुटकारा दिलाने, उसके दृष्टिकोण को व्यापक बनाने, बंधुत्व की भावनाओं को विकसित करने, सामाजिक राष्ट्रीय एकीकरण करने और राष्ट्रीय एकता को बढ़ाने में सहयोग देता है ।

2. **ग्रामीण पुनर्निर्माण में सहायक** – देश की अधिकांश जनसंख्या आज भी गांव में निवास करती है, आजादी से 75 वर्ष के बाद आज भी गांव में अनेक समस्याएं हैं। जिसमें निर्धनता, बेगारी, ऋणग्रस्तता, कृषि का पिछड़ापन ऊंच–नीच, जातिवाद, अंधविश्वास, बालविवाह तथा अनेक आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक समस्याएं दिखाई पड़ती है। इन सब ग्रामीण समस्याओं को उस समय तक नही सुलझाया जा सकता, जब तक ग्रामीण सामाजिक संरचना का समाजशास्त्री ढंग से अध्ययन न किया गया हो समाजशास्त्री ज्ञान के आधार पर ग्रामीणों की सामाजिक, सांस्कृतिक परंपराओं को जानकर ही ग्रामीण पुनःनिर्माण की विभिन्न योजनाओं को सफल बनाया जा सकता है, यह स्पष्ट है कि ग्रामीण पुनःनिर्माण की दृष्टि से समाजशास्त्र की भूमिका काफी महत्वपूर्ण है ।

3. **नगरीय विकास में सहायक –** वर्तमान समय में औद्योगिकीकरण की तेज गति के कारण नगरीयकरण की प्रक्रिया काफी तेजी से चल रही है। शिक्षा, मनोरंजन, चिकित्सा सुविधा, कोर्ट–कचहरी, उद्योग–धंधे आदि सुविधाएं ग्रामीण नागरिकों को नगर की ओर आकर्षित करते जा रहे है, परिणामस्वरूप नगरों की जनसंख्या तेजी से बढ़ रही है। जिस गति से औद्योगिकीकरण और नगरीयकरण होता जा रहा है, उसके साथ–साथ नगरों के स्वस्थ और संतुलित विकास की समस्या उठ खड़ी हुई है। आज नगरों में अनेक समस्याए है जैसे घनी बस्तियां, भीड़–भाड़ युक्त वातावरण, बाल–अपराध, जुआं, मद्यपान,वेश्यावृत्ति, भिक्षावृत्ति आदि वर्तमान में नगरों का भौतिक विकास तेजी से तो हो रहा है, परन्तु सांस्कृतिक दृष्टि से नगर पिछडते जा रहे है। नैतिकता का ह्रास होता जा रहा है परिणामस्वरूप नगरो में सांस्कृतिक पिछड़ापन की स्थिति हो जाती है, जो विभिन्न प्रकार के असंतुलन एवं संघर्ष के लिए उत्तरदाई है इन सब समस्याओं के निराकरण एवं स्वास्थ्य आधार पर नगरीय विकास के लिए समाजशास्त्री ज्ञान का लाभ उठाना अत्यन्त आवश्यक है, यही कारण है कि आज समाजशास्त्र की एक शाखा के रूप में नगरीय समाजशास्त्र का महत्व बढ़ता जा रहा है।

4. **सामाजिक समस्याओं को हल करने में सहायक** – आधुनिक जटिल समाजो के समाजिक संगठन के जटिल होने अर्थात जाति, वर्ग, समुह, धर्म, परिवार, राजनीति आदि के क्षेत्र में विभेदों के बढ़ जाने से अंतः क्रियाएं पहले की तुलना में काफी बढ़

गई है। इसके साथ ही साथ आज समाजों में विभिन्न प्रकार की समस्याए दिखाई पड़ने लगती है, इन समस्याओं को ठीक से समझने के लिए प्रत्येक समाज के सामाजिक संगठन के संबंध में जानकारी प्राप्त करना आवश्यक है, यह जानकारी समाजशास्त्र ही प्रदान करता है। आधुनिक जटिल समस्याओं को केवल आर्थिक या राजनीतिक दृष्टिकोण को अपनाकर नही समझा जा सकता, समस्याए चाहे आर्थिक, राजनीतिक सांस्कृतिक, सामाजिक या नैतिक किसी भी प्रकार की क्यों न हो उनके पीछं कुछ सामाजिक कारक पाये जाते है, उनके लिए कुछ सामाजिक दशाएं उत्तरदायी है, उन सामाजिक कारकों को समझकर ही विभिन्न समस्याओं से छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। इस कार्य में समाजशास्त्र काफी योग देता है। आज भारत में बेगारी, निर्धनता, जातिवाद, मद्यपान, अस्पृश्यता, प्रान्तीयता, भाषावाद, भिक्षावृति, बालविवाह विधवा–विवाह निषेध आदि अनेक समस्याएं पाई जाती है। इन्हें व्यक्तिगत प्रयत्नों से नही सुलझाया जा सकता इन समस्याओं की प्रकृति और कारको को जानने तथा उनके निराकरण के उपाय सुझाने के लिए समाजशास्त्री नितांत अत्यन्त आवश्यकता है, इनके अभाव में न तो किसी भी सामाजिक समस्या को वैज्ञानिक आधार पर सही परिप्रेक्ष्य में समझा और न ही उनका निराकरण किया जा सकता है ।

5. **जनजातीय समस्याओं के उन्मूलन और जनजातीय कल्याण में सहायक –** भारत की जनजातीय जनसंख्या 2011 की जनगणना के अनुसार 10.43 करोड़ है, इनमें से अधिकतर लोग घने जंगलों या पहाड़ी क्षेत्रों में रहते है। ये सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं शैक्षणिक दृष्टिकोण से काफी पिछड़े हुए है। ये लोग आधुनिक सुख–सुविधाओं का लाभ अपनी अज्ञानता एवं निर्धनता के कारण नही उठा पाये है, इन लोगों की अपनी विशिष्ट प्रकार की समस्याए को सुलझाए बिना इन्हे इनके जीवन को किसी भी प्रकार से उन्नत नही किया जा सकता। भारत सरकार जनजातीय समस्याओं के निराकरण और इन लोगों के कल्याण के काफी प्रयत्नशील है, जनजातीय समाजों को समाजशास्त्री दृष्टि से अध्ययन किया जाय, इनके खान–पान, रहन–सहन, रीतिरिवाज, परंपरा, विश्वास अर्थात समग्र रूप में विभिन्न जनजातियों की संस्कृतियों को समझा जाये। यह कार्य समाजशास्त्रियों द्वारा ही किया जा सकता है। जनजातीय समस्याओं के निराकरण और जनजातीय कल्याण में समाजशास्त्र का विशेष योगदान है।
6. **सामाजिक नियोजन में सहायक –** अनेक समाजशास्त्रियों ने अपने अध्ययनों के आधार पर यह स्पष्ट कर दिया है कि आर्थिक नियोजन की सफलता के लिए सामाजिक नियोजन नितांत आवश्यक है। सामाजिक नियोजन के अंतर्गत प्रयास के चार क्षेत्र साधारणतः सम्मिलित किए जाते है पहला मूलभूत सामाजिक सेवा जैसे शिक्षा,

स्वास्थ्य तथा आवास सुविधाओं का विकास, दूसरा ग्रामीण एवं नगरीय कल्याण, तीसरा समाज के दलित एवं कमजोर वर्गो का कल्याण और चौथा सामाजिक सुरक्षा। आज सामाजिक नियोजन सामाजिक परिवर्तन का प्रमुख साधन है, सामाजिक नियोजन की सफलता के लिए समाज की सामाजिक संरचना, विभिन्न समूहों, संस्थाओं, प्रथाओं, मूल्यों, परंपराओं, विश्वासो एवं धर्म का ज्ञान आवश्यक है। यह ज्ञान समाजशास्त्र ही प्रदान करता है, समाज शास्त्र यह बताता है कि भारत जैसे प्रजातांत्रिक देश में लोगों को नवीनता या परिवर्तन को अपनाने के लिए बाध्य नही किया जा सकता केवल शिक्षा और प्रचार के माध्यम से प्रेरित किया जा सकता है ।

7. **प्रजातंत्र को सफल बनाने में समाजशास्त्र का योगदान –** प्रजातंत्र समानता पर आधारित है परन्तु आज विश्व के प्रत्येक देश मे वर्ग, जाति, प्रजाति, धर्म, भाषा, संस्कृति आदि के आधार पर अनेक भेदभाव या सामाजिक दुरी पाई जाती है। एक ही देश में मनुष्य–मनुष्य के बीच विभिन्न आधारों पर ऊंच–नीच की दीवार पाई जाती है, परिणामस्वरूप संकीर्ण मानसिकता पनपती है, व्यक्ति अपने संकुचित समुह हित में सोचता है न की राष्ट्रहित में ऐसे समाजों में प्रजातांत्रिक व्यवस्था की सफलता में कठिनाईयां उत्पन्न हो जाती है, भारत जैसे प्रजातांत्रिक देश में भी प्रजातंत्र के मार्ग में अनेक बाधाएं है, यहां जाति, प्रजाति, धर्म, भाषा, प्रांत आदि के आधार पर अनेक भेदभाव पाए जाते है यहां, जातिवाद, संप्रदायवाद, भाषावाद, क्षेत्रवाद देश की एकता में बहुत बड़ी बाधा है, इस भावात्मक एकता के अभाव में प्रजातंत्र का सफल होना बहुत कठिन है। समाजशास्त्रीय ज्ञान संकीर्णताओं को कम करने और मानव के बीच ऊंच–नीच की दीवार को समाप्त करने में योग देता है। भावात्मक एकता को संभव बनाता है, इसका कारण यह है कि समाजशास्त्र यह मानकर चलता है कि उपयुक्त सभी भेदभाव मानवनिर्मित है। सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक वह संस्कृति पर्यावरण की देन है यह ज्ञान प्रजातांत्रिक व्यवस्थता को सफल बनाने में काफी सहायक है।

8. **पारिवारिक जीवन को सफल बनाने में** – परिवार समाज की मुलभूत ईकाई है। समाजिक संगठन की दृष्टि से इसका विशेष महत्व है, परिवार के क्षेत्र में आज अनेक परिवर्तन हो रहे है साथ ही आधुनिक परिवार के सामने वर्तमान में कई प्रकार की समस्याएं है, आज बहुत से परिवारों में तनाव, संघर्ष और विवाह–विच्छेद की समस्याएं पाई जाती है। वर्तमान में पारिवारिक नियमों, आदर्शो एवं मूल्यों में भी परिवर्तन आ रहा है। अब प्रेम विवाह और अन्तरजातीय विवाह बहुतायत हो रहे है। परिवार की सफलता बहुत कुछ इस बात पर निर्भर करती है कि इसके सदस्य अपने भिन्न–भिन्न परिस्थितियों के अनुरूप कहा तक भुमिकाएं निभाते है, कहां तक अपने कर्तब्य का

ISSN: 2347-2979

पालन करते है ,यदि वे परिवार में अपनी भुमिकाएं ठीक से नही निभा पाते तो वो अपने विशिष्ट समाज के संदर्भ मे भी अपने दायित्व के प्रति उदासीन रह सकते है। पारिवारिक क्षेत्र में व्यक्ति को उसकी प्रस्थिति और भूमिका संबंधी ज्ञान प्रदान करने में समाजशास्त्र अपनी महत्वपूर्ण भुमिका अदा करता है।

इसके अलावा समाजशास्त्र का व्यवसायिक एवं व्यवहारिक महत्व, श्रम समस्याओं के निराकरण मे सहायक व्याधिकी सामाजिक समस्याओं के निराकरण में सहायक, समाज में सहअस्तित्व की भावना का प्रसार करने में सहायक, नवीन सामाजिक परिस्थितियों से अनुकुलन करने में सहायक समाजशास्त्र होता है। उपर्युक्त विवेचना से स्पष्ट है कि भारत की सामजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों के संदर्भ में समाजशास्त्र के अध्ययन का विशेष महत्व है।

## संदर्भ

बघेल, डी.एस., भारतीय समाज : भोपाल कैलाश पुस्तक सदन, 2019.

गुप्ता, एम.एल, समाजशास्त्र, आगरा, साहित्यभवन, 2014.

गोखले बी.जी., भारतीय विचारक, नई दिल्ली, एशिया पब्लिशिंग हाऊस, 2015.

प्रभु, पी.एन., सामाजिक व्यवस्था, 2016.